म-दनी मुज़ा-करा (क़िस्त नम्बर 6)

Gunge Bahron Ke Baare Mein
Suwal Jawab (Hindi)

# गूंगे बहरों के बारे में सुवाल जवाब

- क्या गूंगा बोलने पर क़ुदरत रखने वालों की इमामत कर सकता है ?
- तो क्या गूंगा गूंगों का भी इमाम नहीं हो सकता ?
- क्या गूंगा ज़ब्ह कर सकता है ?
- गूंगे का निकाह किस तरह होगा ?
- "अल्लाह" का इशारा गूंगे बहरे किस तरह करें ?


हमारे सुवालात और
शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल
मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादिरी र-ज़वी
के जवाबात



पेशकश :
मजलिसे म-दनी मुज़ा-करा
(दा'वते इस्लामी)

مکتبۃ المدینہ
(دعوت اسلامی)

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

# किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ

**दीनी** किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اَللّٰھُمَّ افْتَحْ عَلَیْنَا حِکْمَتَکَ وَانْشُرْ
عَلَیْنَا رَحْمَتَکَ یَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِکْرَام

**तरजमा :** ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्म व ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़-ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (اَلْمُستطرَف ج ۱ ص ٤٠ دارالفکر بیروت)

**नोट :** अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत



13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

---

# (गूंगे बहरों के बारे में सुवाल जवाब)

येह रिसाला **( गूंगे बहरों के बारे में सुवाल जवाब )**

मजलिसे म-दनी मुज़ा-करा (दा'वते इस्लामी) ने **उर्दू** ज़बान में पेश किया है।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक-त-बतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब या ई-मेइल) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

**राबित़ा :** मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

**मक-त-बतुल मदीना**

सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा,

अह़मदआबाद-1, गुजरात

MO. 9374031409

E-mail : translationmaktabhind@dawateislami.net

# पहले इसे पढ़ लीजिये

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ तब्लीगे़ क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के बानी, शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी र-ज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने अपने मख़्सूस अन्दाज़ में सुन्नतों भरे बयानात, इल्म व ह़िक्मत से मा'मूर **म-दनी मुज़ा-करात** और अपने तरबिय्यत याफ़्ता मुबल्लिग़ीन के ज़रीए़ कुछ ही अ़र्से में लाखों मुसल्मानों के दिलो में म-दनी इन्क़िलाब बरपा कर दिया है, आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की सोह़बत से फ़ाएदा उठाते हुए कसीर इस्लामी भाई **वक़्तन फ़ वक़्तन** मुख़्तलिफ़ मक़ामात पर होने वाले **म-दनी मुज़ा-करात** में मुख़्तलिफ़ क़िस्म के म-सलन अ़क़ाइद व आ'माल, फ़ज़ाइल व मनाक़िब, शरीअ़त व त़रीक़त, तारीख़ व सीरत, साइन्स व त़िब, अख़्लाक़िय्यात व इस्लामी मा'लूमात और दीगर बहुत से मौज़ूआ़त के मु-तअ़ल्लिक़ सुवालात करते हैं और शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه उन्हें ह़िक्मत आमोज़ इ़श्के़ रसूल صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم में डूबे हुए जवाबात से नवाज़ते हैं। अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के इन अ़त़ा कर्दा दिल चस्प और इल्म व ह़िक्मत से लबरेज़ इर्शादात के म-दनी फूलों की ख़ुश्बूओं से दुन्या भर के मुसल्मानों को महकाने के मुक़द्दस जज़्बे के तह़्त **दा'वते इस्लामी** की **मजलिसे म-दनी मुज़ा-करा** इन म-दनी मुज़ा-करात को ज़रूरी तरमीम के साथ तह़रीरी गुलदस्तों की सूरत में पेश करने की सआ़दत ह़ासिल कर रही है। इस **म-दनी मुज़ा-करे** के तह़रीरी गुलदस्ते का मुत़ा-लआ़ करने से اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ अ़क़ाइदो आ'माल और ज़ाहिर व बात़िन की इस्लाह़, मह़ब्बते इलाही عَزَّوَجَلَّ व इ़श्के़ रसूल صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ला ज़वाल दौलत के साथ साथ मज़ीद ह़ुसूले इल्मे दीन का जज़्बा भी बेदार होगा। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

**﴾मजलिसे म-दनी मुज़ा-करा﴿**

**26 ज़ुल क़ा'दतिल ह़राम 1432 सि.हि./25 अक्तूबर 2011 सि.ई.**

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

# गूंगे बहरों के बारे में सुवाल जवाब

**शैत़ान लाख कोशिश करे मगर आप येह रिसाला मुकम्मल पढ़ कर इल्मे दीन ह़ासिल कीजिये और सवाब के ह़क़दार बनिये ।**

## दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

**सरकारे** मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना, साह़िबे मुअ़त्त़र पसीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बा क़रीना है : "ऐ लोगो ! बेशक बरोज़े क़ियामत उस की दह्शतों और ह़िसाब किताब से जल्द नजात पाने वाला शख़्स वोह होगा जिस ने तुम में से मुझ पर दुन्या के अन्दर ब कसरत **दुरूद शरीफ़** पढ़े होंगे ।"

(الفردوس بماثور الخطاب، ج٥، ص٢٧٧، حديث٨١٧٥)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

## मा'लूमात से कोरा गूंगा बहरा

**गूंगे** बहरे इस्लामी भाइयों और उ़मूमी इस्लामी भाइयों पर मुश्तमिल एक **म-दनी क़ाफ़िला** राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में सफ़र करता हुवा किसी अ़लाक़े में पहुंचा । वहां मुसल्मानों के घर में पैदा होने वाले एक गूंगे बहरे नौ जवान पर इशारों की ज़बान में **इन्फ़िरादी कोशिश** करते हुए जब उसे **नबिय्ये करीम**, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم

की शाने मुबा-रका के **मु-तअ़ल्लिक़** बताया गया तो वोह चौंक कर इशारों में पूछने लगा : **येह कौन हैं ?** या'नी वोह गूंगा बहरा नौ जवान, **नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मान**, सुल्ताने दो जहान صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से बिल्कुल ही अनजान था । बहर ह़ाल **मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी** ने उस को इशारों की ज़बान में मीठे मीठे आक़ा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ाते मुबा-रका के **मु-तअ़ल्लिक़** बताया ।

**आह !** इन बेचारों को दीन कौन सिखाए ! यक़ीनन येह भी हमारे इस्लामी भाई हैं, हमारी तवज्जोह के मुन्तज़िर हैं ।

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ इन की रहनुमाई के लिये दा'वते इस्लामी की त़रफ़ से **''मजलिस बराए ख़ुसूसी इस्लामी भाई''** क़ाइम की गई है जो कि इन में **म-दनी काम** कर रही है इस्लामी भाइयों के लिये **क़ुफ़्ले मदीना कोर्स** करवाने या'नी गूंगे बहरों की इशारों की ज़बान सिखाने का बा क़ाइदा सिल्सिला है और इशारों की ज़बान जानने वाले मुबल्लिग़ीन इन की तरबिय्यत करते हैं । इन की कोशिशों से ढेरों ढेर गूंगे बहरे और नाबीना इस्लामी भाई **हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाआ़त** में शरीक होने के साथ साथ सुन्नतों की तरबिय्यत के **म-दनी क़ाफ़िलों** में सुन्नतों भरा सफ़र भी इख़्तियार करते हैं । **गूंगे बहरों** की रहनुमाई के लिये बा'ज़ **शर-ई अह़काम** सुवालन जवाबन पेश किये जाते हैं ।

# *नमाज़ का बयान*

## तक्बीरे तह़रीमा

**सुवाल:** गूंगे शख़्स के लिये **तक्बीरे तह़रीमा** (या'नी नमाज़ की पहली तक्बीर) का क्या हुक्म होगा ?

**जवाब:** **गूंगा** या ऐसा शख़्स जिस की ज़बान किसी भी वजह से बन्द हो गई हो उस पर **तक्बीरे तह़रीमा** में **तलफ़्फ़ुज़** (या'नी अल्फ़ाज़ अदा करना) ज़रूरी नहीं, दिल में इरादा कर लेना ही काफ़ी है। **बहारे शरीअ़त** में है : "जो शख़्स तक्बीर के **तलफ़्फ़ुज़** पर क़ादिर न हो म-सलन गूंगा हो या किसी और वजह से ज़बान बन्द हो उस पर **तलफ़्फ़ुज़** वाजिब नहीं, दिल में इरादा काफ़ी है।" (बहारे शरीअ़त, जि. 1, हिस्सा : 3, स. 508)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

## क़िराअत

**सुवाल:** गूंगे के लिये **क़िराअत** (क़ुरआने पाक की तिलावत) के बारे में क्या हुक्म है ?

**जवाब:** **गूंगा** चूंकि क़ुरआने मजीद पढ़ने पर क़ादिर नहीं होता इस लिये इस पर **क़िराअत** करना लाज़िम नहीं है। (الدر المختار و رد المحتار، ج۲، ص۲۲۰ ماخوذاً)

**सुवाल:** गूंगा बहरा क़ियाम में क्या करेगा ? क्या ब मिक़्दारे फ़र्ज़ व वाजिब क़िराअत चुप खड़ा रहेगा ?

**जवाब:** जी हां ! क़ियाम में ब मिक़्दारे फ़र्ज़ व वाजिब क़िराअत चुप खड़ा रहेगा।

## नापाकी की हालत और क़िराअत

**सुवाल:** अगर किसी गूंगे ने गुस्ल फ़र्ज़ होने की हालत में **क़िराअत** (क़ुरआने पाक की तिलावत) का इशारा किया तो क्या वोह गुनाहगार होगा ?

**जवाब:** **जी हां,** इस सूरत में येह गुनाहगार होगा क्यूं कि इस के हक़ में इशारा करना ऐसा ही है जैसे किसी बोलने वाले का कलाम (बात) करना । लिहाज़ा जिस त़रह़ बोलने वाले के लिये नापाकी (या'नी गुस्ल फ़र्ज़ होने) की हालत में **क़िराअत** करना **ह़राम** है इसी त़रह़ गूंगे के लिये भी **क़िराअत** का इशारा करना ना जाइज़ व गुनाह है । **उ़-लमाए किराम** رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام फ़रमाते हैं : "अगर किसी गूंगे ने नापाकी (या'नी गुस्ल फ़र्ज़ होने) की ह़ालत में **क़िराअत** का इशारा किया तो उस का येह अ़मल **ह़राम** होगा ।" (قرة عيون الاخيار تكملة ردالمحتار، ج١٢، ص١٤٦)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

## इमामत

**सुवाल:** क्या गूंगा बोलने पर क़ुदरत रखने वालों की **इमामत** कर सकता है ?

**जवाब:** **जी नहीं ।** फ़तावा आ़लमगीरी में है : "क़ारी (या'नी दुरुस्त क़ुरआन पढ़ने वाला जिस की नमाज़ दुरुस्त क़ुरआन पढ़ने की वजह से फ़ासिद न होती हो) को गूंगे और उम्मी (या'नी ग़लत़ क़ुरआन पढ़ने वाला जिस की नमाज़ ग़लत़ क़ुरआन पढ़ने की वजह से फ़ासिद होती हो) की इक़्तिदा करना सह़ीह़ नहीं है ।"

(الفتاوى الهندية، ج١، ص٨٦)

**सुवाल:** तो क्या **गूंगा** गूंगों का भी **इमाम** नहीं हो सकता ?

**जवाब:** **गूंगा** गूंगों का **इमाम** हो सकता है। फु-क़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام फ़रमाते हैं : "अगर गूंगा गूंगों की **इमामत** करे तो सारे गूंगों की नमाज़ हो जाएगी।" **(الفتاوی الهندیة، ج۱، ص۸۳)**

**सुवाल:** गूंगा, उम्मी का **इमाम** बन सकता है या नहीं ?

**जवाब:** **ऐसा** उम्मी जो कि दुरुस्त तौ़र पर **तक्बीरे तह़रीमा** भी न कह सकता हो, गूंगा उस की **इमामत** कर सकता है। **सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह** ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : "**अगर** उम्मी सह़ीह़ तौ़र पर तह़रीमा भी बांध नहीं सकता तो **गूंगे** की इक़्तिदा कर सकता है।" (**الدر المختار ورد المحتار، ج۲، ص۳۹۱**, व बहारे शरीअ़त, जि. 1, ह़िस्सा : 3, स. 570)

**सुवाल:** क्या गूंगा उम्मी की इक़्तिदा कर सकता है ?

**जवाब:** **जी हां,** गूंगा उम्मी की इक़्तिदा में नमाज़ अदा कर सकता है। **सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह** ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : "**उम्मी** गूंगे की इक़्तिदा नहीं कर सकता **गूंगा** उम्मी की कर सकता है।" (**الدر المختار ورد المحتار، ج۲، ص۳۹۱**, व बहारे शरीअ़त, जि. 1, ह़िस्सा : 3, स. 570)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

# नमाज़ की सुन्नतें

**सुवाल:** अगर मुक़्तदी बहरा हो और इमाम बिल जह्र (या'नी बुलन्द आवाज़ से) **क़िराअत** शुरूअ़ कर दे जब कि अभी मुक़्तदी ने सना नहीं पढ़ी तो क्या उस के लिये भी ख़ामोश रहने और सना न पढ़ने का हुक्म होगा ?

**जवाब: जी हां,** बहरे के लिये भी येही हुक्म है या'नी बहरा भी सना न पढ़े । **सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्तरीक़ह** ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : "**इमाम** ने बिल जह्र **क़िराअत** शुरूअ़ कर दी तो मुक़्तदी सना न पढ़े अगर्चे ब वज्ह दूर होने या बहरे होने के इमाम की आवाज़ न सुनता हो जैसे जुमुआ़ व ईदैन में पिछली सफ़ के मुक़्तदी कि ब वज्हे दूर होने के **क़िराअत** नहीं सुनते । (الفتاوى الهندية، ج١، ص٩٠ وغنية المتملى، ص٣٠٤) इमाम आहिस्ता पढ़ता हो तो पढ़ ले ।"

(رد المحتار، ج٢، ص٢٣٢, व बहारे शरीअ़त, जि. 1, ह़िस्सा : 3, स. 523)

# नमाज़ी गूंगा

**बाबुल मदीना** कराची के अ़लाक़े लियाक़त आबाद की एक मस्जिद के इमाम साह़िब के बयान का ख़ुलासा है : कुछ दिनों से जब भी मैं मस्जिद में दाख़िल होता तो एक नौ जवान को पहली **सफ़** में मौजूद पाता, जो अज़ान से पहले ही आ कर बैठ जाता और ज़िक्रो अज़्कार में मश्ग़ूल रहता । मैं उन से बेह़द **मु-तअस्सिर** हुवा कि आज के पुर फ़ितन दौर के अन्दर भरपूर

जवानी में इबादत का ऐसा जज़्बा.....!! नौ जवान का येह भी मा'मूल था कि बहुत देर तक दुआएं मांगता रहता । मैं ने एक दिन उन से मुलाक़ात की तो मा'लूम हुवा कि वोह कुव्वते गोयाई और समाअ़त से महरूम (या'नी गूंगे बहरे) हैं । मज़ीद मा'लूमात की तो पता चला कि येह नेक नमाज़ी **गूंगे बहरे** इस्लामी भाई **दा'वते इस्लामी** के **म-दनी माहोल** से वाबस्ता हैं और **हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** में शिर्कत करने के साथ साथ **आशिक़ाने रसूल** के हमराह **म-दनी क़ाफ़िलों** में भी सुन्नतों भरा सफ़र फ़रमाते हैं । अब तक येह **30** दिन के **म-दनी क़ाफ़िलों** में दो मर्तबा सफ़र की सआ़दत हासिल कर चुके हैं । उस अ़लाक़े के इस्लामी भाइयों का कहना है कि اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ उस **गूंगे बहरे** इस्लामी भाई को **म-दनी क़ाफ़िलों** में सफ़र की ब-र-कत से ऐसा ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ हासिल हुवा कि **येह अक्सर तन्हाई में बैठ कर दुआएं मांगते और ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ से रोते दिखाई देते हैं ।**

**जब कि गूंगे बहरे** इस्लामी भाई के वालिद साहिब का बयान कुछ यूं है कि मेरा बेटा अब पाबन्दी के साथ नमाज़ अदा करता है, इस के इलावा दीगर **म-दनी इन्आ़मात** के साथ साथ गूंगे बहरे इस्लामी भाइयों के इस म-दनी इन्आ़म : **"क्या आज आप ने क़ुरआने पाक** (कन्ज़ुल ईमान) **में कम अज़ कम एक रुकूअ़ की ज़ियारत फ़रमाई ?"** पर भी अ़मल करता है चुनान्चे मेरा बेटा रोज़ाना क़ुरआने मजीद की

ज़ियारत करता है और उसे चूमता भी है । **दा'वते इस्लामी का मेरे ऊपर बहुत बड़ा एह़सान है** जिस ने मेरे बेटे की ज़िन्दगी को बदल कर रख दिया ।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

## सज्दए तिलावत

**सुवाल:** अगर किसी बहरे ने **आयते सज्दा** तिलावत की तो क्या उस पर सज्दा वाजिब होगा ?

**जवाब: अगर** इतनी आवाज़ थी कि अगर वोह बहरा न होता तो सुन लेता तो **सज्दा** वाजिब हो गया वरना नहीं । **फ़तावा आ़लमगीरी** में है : अगर किसी **बहरे** ने **आयते सज्दा** तिलावत की और बहरा होने की वजह से न सुनी (या'नी इतनी आवाज़ थी कि बहरा न होता तो सुन लेता) तो उस पर **सज्दए तिलावत** वाजिब हो जाएगा । (الفتاوى الهندية، ج١، ص١٣٣)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

## जुमुआ़ का बयान

**सुवाल:** अगर ख़तीब ने आ़क़िल बालिग़ मर्द बहरों के सामने **ख़ुत्बए जुमुआ़** पढ़ा तो क्या **ख़ुत्बा** हो जाएगा ?

**जवाब: जी हां, सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्तरीक़ह** ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : "**ख़ुत्बए जुमुआ़** के लिये येह शर्त़ है कि इतनी आवाज़ से हो कि पास वाले सुन सकें अगर कोई अम्र मानेअ़ (या'नी रुकावट) न हो तो अगर ज़वाल से पेश्तर

ख़ुत्बा पढ़ लिया या नमाज़ के बा'द पढ़ा या तन्हा पढ़ा या औरतों बच्चों के सामने पढ़ा तो इन सब सूरतों में जुमुआ न हुवा और अगर **बहरों** या सोने वालों के सामने पढ़ा या हाज़िरीन दूर हैं कि सुनते नहीं या मुसाफ़िर या बीमारों के सामने पढ़ा जो आक़िल बालिग़ मर्द हैं तो हो जाएगा।''

(الدر المختار و رد المحتار، ج۳، ص۲۱, व बहारे शरीअ़त, जि. 1, हिस्सा : 4, स. 766)

**सुवाल:** **जुमुआ** के लिये शर्त है कि इमाम के इलावा कम अज़ कम तीन अफ़राद हों, अगर वोह तीनों **गूंगे** हों तो क्या जुमुआ दुरुस्त हो जाएगा ?

**जवाब:** अगर **जुमुआ** में इमाम के इलावा तीन मुक़्तदी **गूंगे** हों जब भी **जुमुआ** दुरुस्त हो जाएगा। **सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्तरीक़ह** ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : ''अगर तीन ग़ुलाम या मुसाफ़िर या बीमार या **गूंगे** या अनपढ़ मुक़्तदी हों तो **जुमुआ** हो जाएगा, सिर्फ़ औरतें या बच्चे हों तो नहीं।''

(الفتاوى الهندية، ج۱، ص۱٤۸، و رد المحتار، ج۳، ص۲۷)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

## हज का बयान

**सुवाल:** निय्यत करने के बा'द **एह़राम** के लिये एक बार ज़बान से ''**लब्बैक**'' कहना ज़रूरी है, **गूंगे** के लिये क्या हुक्म होगा ?

**जवाब:** **सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्तरीक़ह** ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : ''**एह़राम** के लिये एक मर्तबा ज़बान से **लब्बैक** कहना ज़रूरी है और अगर इस की जगह سُبْحٰنَ اللهِ،اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ، لَا اِلٰهَ اِلَّا اللهُ या और कोई ज़िक्रे इलाही किया और एह़राम की निय्यत की तो एह़राम हो गया मगर सुन्नत **लब्बैक** कहना है । **गूंगा** हो तो उसे चाहिये कि **होंट** को **जुम्बिश** दे ।'' (الفتاوى الهندية، ج١، ص٢٢٢, व बहारे शरीअ़त, जि. 1, ह़िस्सा : 6, स. 1074)

## क्या गूंगा ज़ब्ह़ कर सकता है ?

**सुवाल:** क्या मुसल्मान गूंगे का ज़ब्ह़ किया हुवा जानवर ह़लाल है ?

**जवाब:** **जी हां । सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्तरीक़ह** ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : ''**गूंगे** का ज़बीह़ा ह़लाल है ।'' (الفتاوى الهندية، ج٥، ص٢٨٦, व बहारे शरीअ़त, जि. 3, ह़िस्सा : 15, स. 316)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

## सलाम का बयान

**सुवाल:** अगर बहरे ने किसी को सलाम किया तो उस के जवाब की क्या सूरत होगी ?

**जवाब:** **बहरे** के सलाम के जवाब में सिर्फ़ होंटों को **जुम्बिश** देना (या'नी होंट हिला देना) ही काफ़ी है । **फ़ु-क़हाए किराम** फ़रमाते हैं : ''सलाम इतनी आवाज़ से कहे कि जिस को सलाम

किया है वोह सुन ले और अगर इतनी आवाज़ न हो तो जवाब देना वाजिब नहीं । जवाबे सलाम भी इतनी आवाज़ से हो कि सलाम करने वाला सुन ले और इतना आहिस्ता कहा कि वोह सुन न सका तो वाजिब साक़ित न हुवा, और अगर वोह (सलाम करने वाला) बहरा है तो उस के सामने होंट को **जुम्बिश** दे कि उस की समझ में आ जाए कि जवाब दे दिया, छींक के जवाब का भी येही हुक्म है ।''

**(البزازية على هامش الفتاوى الهندية، ج٦، ص٣٥٥)**

## आ़शिक़े रसूल गूंगा

**बाबुल मदीना** कराची के मुक़ीम इस्लामी भाई ने कुछ इस त़रह़ बताया कि **आ़लमी म-दनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना** में तरबिय्यती निशस्त में शरीक **गूंगे बहरे** इस्लामी भाइयों में एक मुबल्लिग़ इशारों की ज़बान में बयान फ़रमा रहे थे । जब उन्हों ने दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत बताई कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ख़ातिर आपस में **महब्बत** रखने वाले जब बाहम मिलें और **मुसा-फ़ह़ा** करें (या'नी हाथ मिलाएं) और नबी (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) पर **दुरूदे पाक** भेजें तो उन के जुदा होने से पहले दोनों के अगले पिछले गुनाह बख़्श दिये जाते हैं ।'' **(مسند ابی یعلی، ج٣، ص٩٥، حدیث٢٩٥١)** तो एक गूंगे इस्लामी भाई ने बा'दे बयान मुबल्लिग़ इस्लामी भाई को इशारे में दर-ख़्वास्त की, कि मुझे **दुरूदे पाक** और **सलाम** करना सिखाएं । मुबल्लिग़ इस्लामी भाई ने उन की ख़ैर ख़्वाही करते हुए उन्हें मज़्कूरा चीज़ें सिखाना शुरूअ़ कीं । वोह

गूंगे बहरे इस्लामी भाई पाबन्दी से निशस्त में शिर्कत फ़रमाते रहे । आख़िर कार उन्हों ने कुछ ही अ़र्से में इशारों की ज़बान में सलाम करना और दुरूदे पाक पढ़ना सीख लिया । اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ उन्हों ने अपना मा'मूल बना लिया कि जब भी किसी से मुलाक़ात होती है तो पहले सलाम करते हैं और फिर **मुसा-फ़हा कर के** (या'नी हाथ मिला कर) **दुरूदे पाक ज़रूर पढ़ते हैं ।**

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

## *निकाह़ का बयान*

**सुवाल: गूंगे** का **निकाह़** किस त़रह़ होगा ?

**जवाब: गूंगे** का **निकाह़** इशारे के ज़रीए होगा जब कि इस का इशारा समझ में आता हो । **फ़तावा आ़लमगीरी** में है : **निकाह़** जिस त़रह़ बोल कर होता है इसी त़रह़ गूंगे के इशारे से भी हो जाएगा जब कि इस के इशारे समझ में आते हों ।

(الفتاوى الهندية، ج١، ص٢٧٠)

**सुवाल:** क्या गूंगे ऐसों के **निकाह़** के गवाह हो सकते हैं जो बोलने पर क़ादिर हों ?

**जवाब: फ़तावा आ़लमगीरी** में है : "**गूंगे** (निकाह़ के) गवाह नहीं हो सकते कि जो गूंगा होता है बहरा भी होता है हां अगर गूंगा हो बहरा न हो तो हो सकता है ।"

(الفتاوى الهندية، ج١، ص٢٦٨)

**सुवाल:** दो गवाहों में से अगर एक गवाह बहरा हो और कोई उस के कान पर चीख़ कर कहे और वोह सुन ले तो क्या अब **निकाह़** दुरुस्त हो जाएगा ?

**जवाब:** **अगर्चे** एक ही गवाह बहरा हो और कोई उस के कान पर चीख़े तो वोह सुन ले तब भी निकाह़ उस वक़्त तक दुरुस्त नहीं होगा जब तक कि दोनों गवाह एक साथ ईजाब व क़बूल न सुन लें। **फ़तावा ख़ानिया** में है : ''एक गवाह सुनता हुवा है और एक बहरा, बहरे ने नहीं सुना और इस सुनने वाले या किसी और ने चिल्ला कर उस के कान में कहा **निकाह़** न हुवा जब तक दोनों गवाह एक साथ आ़क़िदैन (या'नी निकाह़ के दोनों फ़रीक़ैन म-सलन दूल्हा व वकील या दूल्हा और दुल्हन) से न सुनें।''

**(الفتاوی الخانیة، ج۱، ص۱۵٦)**

**सुवाल:** निकाह़ में ईजाब व क़बूल से क्या मुराद है ?

**जवाब:** ईजाब व क़बूल म-सलन एक कहे मैं ने अपने को तेरी ज़ौजिय्यत में दिया, दूसरा कहे मैं ने क़बूल किया। येह निकाह़ के रुक्न हैं। पहले जो कहे वोह ईजाब है और उस के जवाब में दूसरे के अल्फ़ाज़ को क़बूल कहते हैं। येह कुछ ज़रूर नहीं कि औ़रत की त़रफ़ से ईजाब हो और मर्द की त़रफ़ से क़बूल बल्कि इस का उलटा भी हो सकता है। **(الدرالمختار وردالمحتار، ج٤، ص٧٨)**

**सुवाल:** अगर आ़क़िदैन (ईजाब व क़बूल करने वाले दोनों) **गूंगे** हों तो क्या गूंगे उस **निकाह़** के गवाह बन सकते हैं ?

**जवाब:** **जी हां,** अगर मर्द व औ़रत दोनों गूंगे हों तो गूंगे और बहरे भी उस निकाह़ के गवाह हो सकते हैं। जैसा कि **फ़तावा**

**शामी** में है : आ़क़िदैन (ईजाब व क़बूल करने वाले दोनों) गूंगे हों तो **निकाह़** इशारे से होगा। लिहाज़ा इस **निकाह़** का गवाह गूंगा भी हो सकता है और बहरा भी।

(رد المحتار، ج٤، ص٩٩)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

## त़लाक़ का बयान

**सुवाल:** अगर किसी गूंगे ने अपनी बीवी को इशारे के ज़रीए **त़लाक़** दी तो क्या **त़लाक़** हो जाएगी ?

**जवाब:** **जी हां, त़लाक़** हो जाएगी, लेकिन येह हुक्म इस सूरत में है जब कि वोह लिखना न जानता हो वरना लिख कर देगा तो ही होगी। **फ़त्हुल क़दीर** में है : "**गूंगे** ने इशारे से **त़लाक़** दी हो गई जब कि लिखना न जानता हो, और लिखना जानता हो तो इशारे से न होगी बल्कि लिखने से होगी।"

(فتح القدير، ج٣، ص٣٤٨)

**सुवाल:** क्या इशारे से हर गूंगे की **त़लाक़** हो जाती है या सिर्फ़ उसी की होती है जो कि पैदाइशी गूंगा हो ?

**जवाब:** **इस** से मुराद **पैदाइशी गूंगा** है अगर कोई बा'द में गूंगा हुवा और यूं ही रहा यहां तक कि उस के इशारे समझ में आना शुरूअ़ हो गए जब तो **त़लाक़** हो जाएगी और अगर समझ में न आते हों या उन में शक होता हो तो नहीं होगी। चुनान्चे **फ़ु-क़हाए किराम** رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام फ़रमाते हैं : **गूंगे** की **त़लाक़** इशारे के ज़रीए हो जाती है इस गूंगे से मुराद वोह है जो कि पैदाइशी गूंगा हो या बा'द में हुवा हो और उस के इशारे समझ में आने लग गए

हों, और अगर उस के इशारे ऐसे मा'रूफ़ न हों कि जो कहे समझ में आ जाए या उस में शक होता हो तो बातिल है (या'नी त़लाक़ न होगी) (الفتاوی الهندية، ج١، ص٣٥٤)

**सुवाल:** अगर गूंगे ने इशारे के ज़रीए तीन से कम **त़लाक़ें** दीं तो वोह कौन सी **त़लाक़** क़रार दी जाएगी ?

**जवाब:** **गूंगे** ने अगर इशारे के ज़रीए तीन से कम **त़लाक़ें** दीं तो वोह **रज्ई** शुमार होंगी। फ़ु-क़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام फ़रमाते हैं : ''गूंगे ने जो **त़लाक़** इशारे से दी अगर तीन से कम है तो **त़लाक़े** रज्ई[1] शुमार होगी।'' (الفتاوی الهندية، ج١، ص٣٥٤)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

## *ज़िहार का बयान*

**सुवाल:** अगर गूंगा **ज़िहार** (इस की ता'रीफ़ आगे मौजूद है) करे तो क्या दुरुस्त हो जाएगा ?

**जवाब:** **जी हां,** अगर गूंगे के इशारे समझ में आते हैं तो उस का इशारे के ज़रीए किया हुवा **ज़िहार** हो जाता है, और अगर लिखना जानता हो तो लिखने से भी वाक़ेअ़ हो जाएगा जब कि उस की निय्यत भी **ज़िहार** की हो। चुनान्चे फ़ु-क़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام फ़रमाते हैं : ''**गूंगे** ने लिख कर या ऐसे इशारे से **ज़िहार** किया जो कि मा'लूम हो और उस की निय्यत भी हो तो **ज़िहार** लाज़िम (या'नी लागू) हो जाएगा, जिस त़रह़ कि उस की दी हुई त़लाक़ हो जाती है।'' (الفتاوی الهندية، ج١، ص٥٠٨)

1 : त़लाक़े रज्ई की तफ़्सीली मा'लूमात के लिये **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ बहारे शरीअ़त जिल्द 2, ह़िस्सा 8 से ''रज्अ़त का बयान'' मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये।

**सुवाल: ज़िहार**[1] किसे कहते हैं ?

**जवाब: अपनी** बीवी को या उस के किसी जुज़्वे शाएअ़ को (म-सलन उस के आधे ह़िस्से को) या ऐसे जुज़ (ह़िस्से) को जो कि कुल से ता'बीर किया जाता हो (या'नी वोह ह़िस्सए बदन बोल कर पूरा जिस्म मुराद लिया जाता हो जैसे सर, गरदन वग़ैरा) ऐसी औ़रत से तश्बीह देना जो उस पर हमेशा के लिये ह़राम हो (जैसे मां, बहन, बेटी, ख़ाला, फूफी, भान्जी, भतीजी) या उस के किसी ऐसे उ़ज़्व (ह़िस्से) से तश्बीह देना जिस की त़रफ़ देखना (उस के लिये) **ह़राम** हो (जैसे शर्मगाह, रान, पेट, पीठ वग़ैरा) म-सलन (बीवी से) कहा कि तू मुझ पर मेरी मां की मिस्ल (त़रह़) है या तेरा सर या तेरी गरदन या तेरा निस्फ़ मेरी मां की पीठ की मिस्ल है ।

(बहारे शरीअ़त, जि. 2, ह़िस्सा : 8, स. 205)

**सुवाल: ज़िहार** का हुक्म क्या है ?

**जवाब:** इस का हुक्म येह है कि जब तक मर्द **ज़िहार** का कफ़्फ़ारा अदा न कर ले उस वक़्त तक अपनी बीवी से जिमाअ़ करना, शह्वत के साथ उस का बोसा लेना, या (शह्वत से) उस को छूना, या (शह्वत के साथ) उस की शर्मगाह की त़रफ़ नज़र करना **ह़राम** है। और बिग़ैर शह्वत छूने या बोसा लेने में ह़रज नहीं, मगर लब का बोसा बिग़ैर शह्वत भी जाइज़ नहीं ।

(الجوهرة النيرة، الجزء الثانی، ص۸۲، و الدر المختار، ج۵، ص۱۳۰)

**सुवाल: ज़िहार** का कफ़्फ़ारा क्या है ?

**जवाब: गूंगा** और **ग़ैर गूंगा** दोनों ही के लिये **ज़िहार** के कफ़्फ़ारे की तीन सूरतें

1 : ज़िहार के तफ़्सीली अह़काम के लिये मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ़ बहारे शरीअ़त जिल्द 2, ह़िस्सा 8 में ''ज़िहार का बयान'' और ''कफ़्फ़ारे का बयान'' पढ़ लीजिये ।

हैं ﴾1﴿ गुलाम या कनीज़ आज़ाद करे अगर इस पर क़ुदरत न हो तो ﴾2﴿ (सिने हिजरी के) दो माह के लगातार रोज़े रखे अगर इस पर क़ुदरत न हो तो ﴾3﴿ साठ मिस्कीनों को दो वक़्त (या'नी सुब्ह़, शाम का) खाना खिलाए या 60 मसाकीन को स-द-क़ए फ़ित्र अदा करे। (बहारे शरीअ़त, जि. 2, ह़िस्सा : 8, स. 104, 109 मुलख़्ख़सन)

**सुवाल:** अगर बीवी से जिमाअ़ करना न चाहे या बीवी ही फ़ौत हो जाए तो क्या फिर भी **कफ़्फ़ारा** अदा करना होगा ?

**जवाब: नहीं। फ़तावा आ़लमगीरी** में है : **ज़िहार** करने वाला जिमाअ़ का इरादा करे तो **कफ़्फ़ारा** वाजिब है और अगर येह चाहे कि वत़ी न करे और औ़रत उस पर ह़राम ही रहे तो **कफ़्फ़ारा** वाजिब नहीं और अगर इरादए जिमाअ़ था मगर ज़ौजा मर गई तो वाजिब न रहा। **(الفتاوى الهندية، ج١، ص٥٠٩)**

## लिआ़न का बयान

**सुवाल: लिआ़न** किसे कहते हैं ?

**जवाब: मर्द** ने अपनी औ़रत को ज़िना की तोहमत लगाई इस त़रह़ कि अगर **अज्नबिय्या** औ़रत को लगाता तो **ह़द्दे क़ज़फ़** (या'नी तोहमते ज़िना की ह़द) इस पर लगाई जाती। या'नी औ़रत आ़क़िला (या'नी अ़क़्ल वाली), बालिग़ा, ह़ुर्रा (या'नी आज़ाद), मुस्लिमा, अ़फ़ीफ़ा (या'नी पाक दामन) हो तो **लिआ़न** किया जाएगा। इस का त़रीक़ा येह है कि क़ाज़ी के ह़ुज़ूर पहले शोहर क़सम के साथ चार मर्तबा शहादत (गवाही) दे या'नी कहे कि मैं शहादत (गवाही) देता हूं कि मैं ने जो इस औ़रत को ज़िना की तोहमत लगाई इस में ख़ुदा की क़सम मैं सच्चा हूं फिर पांचवीं मर्तबा येह कहे कि उस पर ख़ुदा की ला'नत अगर इस अम्र में

कि उस को ज़िना की तोहमत लगाई झूट बोलने वालों से हो । और हर बार लफ़्ज़ "इस" से औ़रत की त़रफ़ इशारा करे फिर औ़रत चार मर्तबा येह कहे कि मैं शहादत (गवाही) देती हूं ख़ुदा की क़सम ! इस ने जो मुझे ज़िना की तोहमत लगाई है इस बात में झूटा है और पांचवीं मर्तबा येह कहे कि उस पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ग़ज़ब हो अगर येह उस बात में सच्चा हो जो मुझे ज़िना की तोहमत लगाई । **लिआ़न** में लफ़्ज़ शहादत (गवाही) शर्त़ है अगर येह कहा कि ख़ुदा की क़सम खाता हूं कि सच्चा हूं **लिआ़न** न हुवा । (बहारे शरीअ़त, जि. 2, हि़स्सा : 8, स. 220)

**सुवाल:** अगर मियां, बीवी दोनों या उन में से कोई एक गूंगा हो तो क्या उन के दरमियान **लिआ़न** हो जाएगा ?

**जवाब: जी नहीं । दुर्रे मुख़्तार** में है : "अगर मियां बीवी दोनों गूंगे हों या कोई एक गूंगा हो तो उन के दरमियान **लिआ़न** नहीं हो सकता ।"

(الدرالمختار،ج٥، ص١٦٢)

**सुवाल:** अगर **लिआ़न** के बा'द अभी क़ाज़ी ने तफ़रीक़ (जुदाई) नहीं की थी कि उन में से कोई गूंगा हो गया तो क्या येह **लिआ़न** दुरुस्त हो जाएगा, और उन के दरमियान जुदाई होगी ?

**जवाब: नहीं ।** उन के दरमियान तफ़रीक़ (जुदाई) नहीं होगी । **फ़ु-क़हाए किराम** رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام फ़रमाते हैं : "अगर कोई तफ़रीक़ से पहले और **लिआ़न** के बा'द गूंगा हो गया तो उन के दरमियान तफ़रीक़ (जुदाई) न होगी ।" (الدرالمختار،ج٥، ص١٦٢)

**सुवाल:** तो क्या इस सूरत में उन पर ह़द (ज़िना की औ़रत पर, तोहमत की शोहर पर) होगी ?

**जवाब: जी नहीं ।** इस सूरत में किसी पर ह़द नहीं होगी, क्यूं कि शुबा आ

गया और शुबा की वजह से हुदूद साक़ित (दूर) हो जाती हैं। चुनान्चे **दुर्रे मुख़्तार** में है : "और न किसी को ह़द लगेगी क्यूं कि शुबा की वजह से ह़द दूर हो जाती है।" (الدر المختار، ج٥، ص١٦٢)

## क़सम का बयान

**जवाब:** अगर किसी ने **क़सम** खाई कि किसी से भी कलाम नहीं करूंगा, फिर उस ने किसी गूंगे या बहरे से कलाम कर लिया तो क्या उस की क़सम टूट जाएगी ?

**जवाब: जी हां ।** फ़ु-क़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام फ़रमाते हैं : अगर किसी ने क़सम खाई कि किसी से कुछ नहीं बोलेगा और गूंगे या बहरे से कलाम कर लिया तो क़सम टूट जाएगी ।

(الفتاوى الهندية، ج٢، ص١٠٠)

## अ़क़ीदे का बयान

## "अल्लाह" का इशारा गूंगे बहरे किस त़रह़ करें ?

**सुवाल:** 'आज कल गूंगे बहरों को तरबिय्यत देने वाले "**अल्लाह**" का इशारा आस्मान की त़रफ़ उंगली उठवा कर सिखाते हैं येह कहां तक दुरुस्त है ?

**जवाब:** येह त़रीक़ा क़त़्अ़न ग़लत़ है। इन बेचारों के ज़ेह्न में येही नज़रियात बैठ जाते होंगे कि "**अल्लाह**" तआ़ला ऊपर है या ऊपर उस का **मकान है** जिस में वोह रहता है येह दोनों बातें **कुफ़्र** हैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जिहत (या'नी सम्त) से भी पाक है और **मकान** से भी। आस्मान की त़रफ़ इशारा करने के बजाए इन को हाथ के ज़रीए लफ़्ज़ "**अल्लाह** (اللہ)" बनाना सिखाना चाहिये और इस का त़रीक़ा निहायत ही आसान है। सीधे हाथ की उंग्लियां मा'मूली सी कुशादा कर के अंगूठे का सिरा ऊपर की त़रफ़ थोड़ा सा बढ़ा कर

शहादत की उंगली के पहलू के वस्त में लगा लीजिये अब सीधी हथेली की पुश्त की त़रफ़ देखिये तो लफ़्ज़ **अल्लाह** (اللہ) महसूस होगा । इसी त़रह़ कर के उलटे हाथ की हथेली की अगली त़रफ़ देखेंगे तो **अल्लाह** (اللہ) लिखा हुवा नज़र आएगा ।

## *फ़िल्में कुफ़्रिय्यात सीखने का ज़रीआ़ हैं*

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह तआ़ला** के लिये **मकान** और जिहत (या'नी सम्त) साबित करने वाले जुम्ले लोगों में काफ़ी राइज होते जा रहे हैं म-सलन "ऊपर वाला" कहना तो बहुत ज़ियादा आ़म है । जो कि अक्सर लोगों ने ज़ियादा तर फ़िल्मों डिरामों से सीखा है । चूंकि हर मुसल्मान **कुफ़्रिय्यात** की पहचान नहीं कर पाता, इस वजह से न जाने कितने मुसल्मान रोज़ाना येह ग़-लतियां करते होंगे । **जिन लोगों से ज़िन्दगी में कभी एक बार भी येह जुम्ला सादिर हो गया हो उन्हें चाहिये कि इस से तौबा करें और नए सिरे से कलिमा पढ़ें और अगर शादी शुदा हैं तो नए सिरे से निकाह़ भी करें ।** काश ! मुसल्मान **बुरे ख़ातिमे** का डर अपने अन्दर पैदा करें, फ़िल्मों डिरामों और गाने बाजों से कनारा कशी इख़्तियार करें और **ज़रूरिय्याते दीन** का इ़ल्म ह़ासिल करें । **आह !** मौत हर वक़्त सर पर खड़ी है ! **मौत** बीमारियों, धमाकों, हंगामों, सैलाबों, तूफ़ानी बारिशों, ज़ल्ज़लों, आतश ज़दगियों, नीज़ तेज़ रफ़्तार गाड़ियों के ह़ादिसों के ज़रीए अच्छे ख़ासे कड़यल जवानों को भी फ़ौरी तौर पर उचक कर ले जाती है और सारी ख़र मस्तियां और फ़न्कारियां ख़ाक में मिल जाती हैं

*जल गए परवाने शम्एं पानी पानी हो गईं*
*मेरा तेरा ज़िक्र हो कर अन्जुमन में रह गया*

**फ़रमाने मुस्तफ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर दस मरतबा सुब्ह़ और दस मरतबा शाम दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी। (مجمع الزوائد)

## ﴿९२﴾ फ़ेहरिस ﴿७८६﴾


| उ़न्वानात | सफ़ह़ा | उ़न्वानात | सफ़ह़ा |
|---|---|---|---|
| पहले इसे पढ़ लीजिये | 1 | जुमुआ़ का बयान | 9 |
| दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत | 2 | ह़ज का बयान | 10 |
| मा'लूमात से कोरा गूंगा बहरा | 2 | क्या गूंगा ज़ब्ह़ कर सकता है ? | 11 |
| नमाज़ का बयान | 4 | सलाम का बयान | 11 |
| तक्बीरे तह़रीमा | 4 | आ़शिक़े रसूल गूंगा | 12 |
| क़िराअत | 4 | निकाह़ का बयान | 13 |
| नापाकी की ह़ालत और क़िराअत | 5 | त़लाक़ का बयान | 15 |
| इमामत | 5 | ज़िहार का बयान | 16 |
| नमाज़ की सुन्नतें | 7 | लिआ़न का बयान | 18 |
| नमाज़ी गूंगा | 7 | क़सम का बयान | 20 |
| सज्दए तिलावत | 9 | अ़क़ीदे का बयान | 20 |


# ماٰخذ ومراجع


| کتاب | مطبوعہ | کتاب | مطبوعہ |
|---|---|---|---|
| الفردوس بماثور الخطاب | دارالکتب العلمیۃ بیروت | غنیۃ المتملی | سہیل اکیڈمی لاہور |
| مسند ابی یعلی | دارالکتب العلمیۃ بیروت | فتاوی عالمگیری | دارالفکر بیروت |
| فتاوی خانیہ | پشاور | درمختار | دارالمعرفۃ بیروت |
| فتح القدیر | کوئٹہ | رد المحتار | دارالمعرفۃ بیروت |
| فتاوی بزازیہ | دارالفکر بیروت | بہارِ شریعت | مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی |

# नेक बनने का नुस्ख़ा

गूंगे बहरों के लिये

पन्दरहवीं सदी की अ़ज़ीम इ़ल्मी व रूह़ानी शख़्सिय्यत

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी

ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल

**मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

ने इस पुर फ़ितन दौर में नेकियां करने और गुनाहों से बचने के त़रीक़ों

पर मुश्तमिल शरीअ़त व त़रीक़त का जामेअ़ मज्मूआ़

# 27 म-दनी इन्आ़मात

ब सूरते सुवालात अ़त़ा फ़रमाए हैं। इन के मुत़ाबिक़ आसानी से अ़मल करने का त़रीक़ए कार आख़िर में दिया गया है। मज़ीद मा'लूमात के लिये **मक-त-बतुल मदीना** की किसी भी शाख़ से किताब **"जन्नत के त़लब गारों के लिये म-दनी गुलदस्ता"** त़लब फ़रमा सकते हैं।

***मर्कज़ी मजलिसे शूरा*** (दा'वते इस्लामी)

SC 1286

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

## सुन्नत की बहारें

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आलमगीर ग़ैर सियासी तहरीक **दा'वते इस्लामी** के महके महके म-दनी माहोल में ब कसरत सुन्नतें सीखी और सिखाई जाती हैं, हर जुमा'रात इशा की नमाज़ के बा'द आप के शहर में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात गुज़ारने की म-दनी इल्तिजा है। आशिक़ाने रसूल के **म-दनी क़ाफ़िलों** में ब निय्यते सवाब सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये सफ़र और रोज़ाना फ़िक्रे मदीना के ज़रीए **म-दनी इन्आमात** का रिसाला पुर कर के हर म-दनी माह के इब्तिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये, اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की ब-र-कत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और **ईमान की हिफ़ाज़त** के लिये कुढ़ने का ज़ेहन बनेगा।

हर इस्लामी भाई अपना येह ज़ेहन बनाए कि **"मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।** اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ" अपनी इस्लाह़ की कोशिश के लिये **"म-दनी इन्आमात"** पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये **"म-दनी क़ाफ़िलों"** में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ


## मक-त-बतुल मदीना की शाखें

**मुम्बई :** 19, 20, मुहम्मद अ़ली रोड, मांडवी पोस्ट ऑफ़िस के सामने, मुम्बई फ़ोन : 022-23454429

**देहली :** 421, मटिया महल, उर्दू बाज़ार, जामेअ़ मस्जिद, देहली फ़ोन : 011-23284560

**नागपूर :** ग़रीब नवाज़ मस्जिद के सामने, सैफ़ी नगर रोड, मोमिन पुरा, नागपूर : (M) 09373110621

**अजमेर शरीफ़ :** 19/216 फ़लाहे दारैन मस्जिद, नाला बाज़ार, स्टेशन रोड, दरगाह, अजमेर फ़ोन : 0145-2629385

**हैदरआबाद :** पानी की टंकी, मुग़ल पुरा, हैदरआबाद फ़ोन : 040-24572786

**मक-त-बतुल मदीना®**
दा'वते इस्लामी

सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा अहमदआबाद-1. गुजरात, इन्डिया
Mo.091 93271 68200 E-mail : maktabahind@gmail.com www.dawateislami.net